इकाई-II

8. क्या निराश हुआ जाए

–हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रस्तावना प्रसंग–

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई। कैसे कहूँ कि लोगों में दया–माया रह ही नहीं गई। जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

– पाठ से

प्रश्न

1. बाबा आम्टे और मदर टेरेसा के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. मानवतापूर्ण कार्यों से ही मानवता को जीवित रखा जा सकता है। स्पष्ट कीजिए।
3. मानव और दानव में भेद मात्र मानवता से ही है। स्पष्ट कीजिए।

SCERT TELANGANA

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ऊँचे पद पर हैं उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता। जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिलकुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिंता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था? रवींद्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति-सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलन-भूमि 'मानव महा-समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फ़रेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सचाई केवल भीरू और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत बुरा आचरण है। भारत वर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरद्रिजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाए गए हैं जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन सब समय पवित्र नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

SCERT TELANGANA

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज़ है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सचाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीज़ों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला, ''यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।'' उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया से सचाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुककर चलती थी। गंतव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, ''यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था।'' परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, ''हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।'' डर तो मेरे मन में था पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं हैं। परंतु यात्री इतने घबरा गए कि मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, ''इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को

SCERT TELANGANA

पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।''

मैं भी बहुत भयभीत था पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं पर उसे बस से उतारकर एक जगह घेरकर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, ''अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस बस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है।'' फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, ''पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।'' यात्रियों में फिर जान आयी। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफ़ी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गये।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-माया रह ही नहीं गयी! जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

SCERT TELANGANA

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज़ मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाँढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की ज़रूरत नहीं है।

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. अच्छा व्यवहार करने से समाज में भलाई फैलती है। कैसे? स्पष्ट कीजिए।
2. दोषों का पर्दाफाश करना कब बुरा रूप ले सकता है? क्यों?

पढ़िए

1. लेखक ने लेख का शीर्षक क्या निराश हुआ जाये क्यों रखा होगा? क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते हैं? अपनी ओर से इस पाठ का एक शीर्षक दीजिए और उसका कारण बताइए।
2. लेखक ने अपने जीवन की दो घटनाओं में रेलवे के टिकट बाबू और बस कंडक्टर की अच्छाई तथा ईमानदारी की बातें बताई हैं। वे क्या हैं?
3. लेखक ने आज के समाज में कौन-कौन सी बुराइयाँ देखीं?
4. आज के समाज में जीवन के महान मूल्यों के प्रति आस्था डगमगा रही है। क्यों?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. आज के समाज में मूल्य कम होते जा रहे हैं। इसका आप क्या कारण मानते हैं?
2. भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपना क्रोध व्यक्त करना किस बात को प्रमाणित करता है?
3. 'कर भला तो हो भला।' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. "हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।" आपके विचार से हमारे महान मनीषियों ने किस तरह के भारत के सपने देखे थे?
2. आपके सपनों का भारत कैसा होना चाहिए?

शब्द भंडार

निम्नलिखित युग्म शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

आरोप-प्रत्यारोप, दिन-रात, लोभ-मोह, मारने-पीटने, गुण-दोष

SCERT TELANGANA

भाषा की बात

1. समास का एक प्रकार है- द्वंद्व समास। इसमें दोनों शब्द प्रधान होते हैं। जब दोनों भाग प्रधान होंगे तो एक दूसरे में द्वंद्व (स्पर्द्धा, होड़) की संभावना होती है। कोई किसी से पीछे रहना नहीं चाहता, जैसे- चरम और परम = चरम-परम, भीरु और बेबस = भीरु-बेबस। दिन और रात = दिन-रात। और के साथ आए शब्दों के जोड़े को और हटाकर (-) चिह्न भी लगाया जाता है। कभी-कभी एक साथ भी लिखा जाता है। द्वंद्व समास के बारह उदाहरण ढूँढकर लिखिए।
2. पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाओं के उदाहरण खोजकर लिखिए।

प्रशंसा

लेखक ने अपने जीवन में कई बार धोखा खाया। वह ठगा भी गया। किंतु विभिन्न परिस्थितियों में कुछ ईमानदार व सज्जन लोगों के आगमन द्वारा उसके मन का हौंसला बँधा रहा। हमारे सदाचार का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

आपने इस लेख में एक बस की यात्रा के बारे में पढ़ा। इससे पहले भी आप एक बस यात्रा के बारे में पढ़ चुके हैं। यदि दोनों बस यात्राओं के लेखक आपस में मिलते तो एक-दूसरे को कौन-कौन सी बातें बताते? अपनी कल्पना से उनकी बातचीत लिखिए।

परियोजना कार्य

समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और टेलीविज़न पर आपने ऐसी अनेक घटनाएँ देखी-सुनीं होंगी जिनमें लोगों ने बिना किसी लालच के दूसरों की सहायता की हो या ईमानदारी से काम किया हो। ऐसे समाचार तथा लेख एकत्रित करें और कम से कम दो घटनाओं पर अपनी टिप्पणी लिखें।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। 2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ। 3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ। 4. ईमानदारी का महत्व बता सकता/सकती हूँ। 5. परिचित विषय पर निबंध लिखने का प्रयास कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

थैंक्यू निकुंभ सर

उपवाचक

-सुरेश उनियाल

पहले आपको बच्चे से मिलवाऊँ। तो ये हैं- ईशान अवस्थी। दस साल के हो गए हैं लेकिन दो साल से तीसरी कक्षा में ही पढ़ रहे हैं। इन्हें अगर आनंद आता है तो रंगों, मछलियों, पतंगों और अपने पालतू कुत्ते की संगत में। क्लास में क्या पढ़ाया जा रहा है, इनकी समझ में नहीं आता था। कुछ पढ़ने की कोशिश में सारे अक्षर आँखों के सामने डाँस करने लगते थे। होमवर्क से इन्हें चिढ़ थी, रिपोर्ट कार्ड इनके लिए कागज़ का टुकड़ा-भर था जिसका इस्तेमाल इनके डाँगी ज़्यादा अच्छी तरह से कर सकते थे, उसे चिंदी-चिंदी करके।

टैस्ट में सवाल था तीन गुणा नौ कितने? सामने आ गए सौर मंडल के नौ ग्राह केतु के पास ले गया। दोनों में टक्कर हुई और नौ हो गया चूर-चूर। बचा क्या तीन। लिख दिया आंसर शीट पर। ईशान का तरीक़ा तो यही था।

पहले पीरियड में क्लास से बाहर कर दिए तो दूसरे पीरियड में इसलिए बंक कर गए कि मैथ्स का होमवर्क तो किया ही नहीं था। निकल गए अकेले सड़क पर। रात को याद आया तो बड़े भैया योहान को जगाकर उनसे एब्सेंट नोट तैयार कराने के लिए खुशामद की। पापा को पता चला तो डाँट पड़ी।

अगले दिन पापा स्कूल में टीचर्स से मिले तो और बहुत-सी बातों का पता चला। तय हुआ कि ईशान को बोर्डिंग स्कूल भेज दिया जाए क्योंकि बोर्डिंग स्कूलवाले ठोक-पीटकर ठीक कर देते हैं।

ईशान चिल्लाता रह गया कि वह बोर्डिंग स्कूल नहीं जाएगा, माँ से दूर नहीं जाएगा, लेकिन पिता नहीं माने।

वहाँ से पिता को आश्वासन मिला कि यहाँ तो बड़े-बड़े बिगडैल घोड़ों को नाल पहनाई है हमने। और था भी कुछ ऐसा ही। यह टीचर डपटते कुछ इस तरह कि वह डाँट कम और अपमान ज़्यादा होता। ड्राइंग टीचर तो पिटाई करने से भी नहीं चूके। बात करने के लिए था तो साथ बैठनेवाला लड़का राजन दामोदरन जो बैसाखियों के सहारे चलता था।

SCERT TELANGANA

परिवार से दूरी और हर बात पर अपमान ने ईशान को तोड़कर रख दिया। वह अपने में ही सिमटकर रह गया। ज़बान जैसे मुँह के अंदर बंद होकर रह गई। लेकिन किसी को इसकी परवाह नहीं थी। माँ का फ़ोन आया तब भी यह ज़बान बंद ही रही। वह बता रही थीं कि इस शनिवार को मिलने नहीं आ पाएँगे क्योंकि भाई योहान का टेनिस मैच था। माँ बात करती जा रही थीं और ईशान फ़ोन नीचे रखकर चला गया था। सिर झुकाए, चुपचाप।

एक दिन एक नए ड्राइंग टीचर आए। राम शंकर निकुंभ। वही गुरु जिनका ज़िक्र ऊपर किया जा चुका है। आए भी तो एक तूफ़ान की तरह। नियम, कायदे, अनुशासन को तोड़ने के संदेश के साथ। जो मन में है, जो आपकी कल्पना में है, उसे कागज़ पर उतारो।

हर बच्चा अपने मन से चित्र बना रहा था। पूरे क्लासरूम में जैसे रंगों का एक कार्निवॉल-सा सज रहा हो। लेकिन कागज़ की एक शीट अब भी कोरी थी। निकुंभ सर की नज़र इस कार्निवॉल पर से घूम-घूमकर उस सफ़ेद शीट की ओर जाती। इस उम्मीद के साथ जाती कि वहाँ रंगों ने अपना खेल शुरू कर दिया होगा। लेकिन शीट तो कोरी ही मिलती। उस चुप्पे से बच्चे से बात करने की कोशिश की, लेकिन ज़बान तो क्या, उसकी उदास आँखें भी कुछ बोलने से इनकार कर रही थीं।

उसके बारे में जानने के लिए ईशान की दूसरे विषयों के होमवर्क की कॉपियाँ देखीं। कुछ और अधिक जानने के लिए मुंबई उसके घर चले गए। ईशान की चीज़े देखी तो पता चला कि उस चुप्पे से बच्चे के भीतर तो एक रंगों का जादूगर छिपा बैठा है। कल्पनाशीलता की जो उड़ान यहाँ है, वह किसी आम बच्चे में तो नहीं होती। नासमझी एक इतनी बड़ी प्रतिभा को बरबाद कर रही है। तय किया कि ऐसा नहीं होने देंगे।

पहले तो पिता को डाँट पिलाई। बताया कि डिसलेक्सिया नाम की एक बीमारी होती है, जिसमें बच्चे को शब्दों और अंकों की जटिल प्रक्रिया को समझने में दिक्कत होती है। जो चीज़े आम बच्चे को आसानी से समझ में आ सकती हैं, उन्हें समझाने के लिए उस पर अतिरिक्त मेहनत की जाने की ज़रूरत है। लेकिन उसकी उस एक अक्षमता को लेकर कोसते रहने से एक कलाकार के रूप में उसकी प्रतिभा को बरबाद किया जा रहा है।

स्कूल में प्रिंसिपल को भी समझाया कि एक होनहार बच्चे को नालायक़ मानकर कोसा जा रहा है और नष्ट किया जा रहा है। उसे डाँट की नहीं, समझे जाने की ज़रूरत है, सहानुभूति की ज़रूरत है।

वह अपने काम पर लग गए। उस चुप्पे बच्चे की पहले तो ज़बान लौटाई, फिर उसकी

SCERT TELANGANA

कल्पनाशक्ति और कुछ कर दिखाने की इच्छा। दूसरे विषयों पर भी वे उसके साथ मेहनत करते रहे।

और फिर एक दिन निकुंभ सर ने एक अनोखा एलान किया। स्कूल में एक ड्राइंग कंपिटीशन का। इसमें सब हिस्सा लेंगे, बच्चे भी और टीचर भी।

नियत दिन पर कांपिटीशन शुरू हुआ। सब आए लेकिन ईशान का कहीं पता ही नहीं था। समय हो गया था। राजन से पूछा तो पता चला कि वह तो सुबह ही उठकर कहीं चला गया था।

वह गया था झील के किनारे, उसके पूरे वातावरण को सुबह की आभा में अपने भीतर समेटने।

एक घंटा बीत गया था। निकुंभ सर निराश हो गए थे लेकिन तभी वह दिखाई दिया और बिना कुछ बात किए काम पर लग गया।

निर्णय के लिए आई थीं प्रख्यात चित्रकार ललिता लाज़मी। प्रिंसपल साहब ने निर्णय की घोषणा की कि दो चित्रों के बीच 'टाई' है। जीतना तो एक को ही था इसलिए गुरु-निकुंभ सर पीछे रह गए और जीत गया शिष्य-ईशान। तालियों का शोर हो रहा था लेकिन ईशान अपने में सिटा बच्चों के पीछे दुबका जा रहा था।

स्कूल की एनुअल रिपोर्ट छपी तो उसके पहले आवरण पर छपी थी- ईशान की पेंटिंग और पीछे के पृष्ठ पर निकुँभ सर की पेंटिंग। ईशान का चेहरा रंगों के अंतरिक्ष के बीच में। खुशी से खिला हुआ।

ईशान को यह खुशी देने के लिए धन्यवाद निकुंभ सर।

फ़िल्म की कथा का पुनर्लेखन

प्रश्न :

१. अपनी मनपसंद कला के बारे में बताइए।

२. ईशान में कैसी प्रतिभा छिपी थी? अपने शब्दों में बताइए।

३. बच्चों के प्रति निकुंभ सर के विचार कैसे थे?

SCERT TELANGANA